

# कवितायें

आत्मिक, परिवार, जीवन, बुढ़ापा, मौत

September 22, 2024



## Contents



## Chapter 1

### Hindi Poems

### हमारा बचपन

बच्चे चार साइकिल दो से इतनी ज़्यादा खुशी हम आठ, साइकल एक, दुगनी थी हमारी  
खुशी इक निक्कर क़मीज़, चप्पल का जोड़ा खज़ाना था हर ज़ंझ मनाते धूम धाम  
से, प्यार भर देता था खुशी

माँ बाप मुसकाते चुपके पीते ज़हर, शहद हमें पिलाते थे खुद रह भूखा मक्खन लदे परौंठे  
हमें खिलाते थे इक बादशाही ज़िंदगी से इक दिन में बने खानाबदोश ना जाने  
कैसे हस के, राज गद्दी पे हमें बिठाते थे

पेड़ों पे आम अमरूद नहीं, मीठा अमृत रस मिलता था तंदूर से आग नहीं, नर्म सेक दिल  
को सकून मिलता था पैसा एक ना पल्ले घर शीश महल दिखता था खुशियों के  
फवारे गूँजते, बेफ़िक्र सुख चैन मिलता था

नाम पानीपत पर अक्सर नल में पानी नहीं था दो पम्प थे कसरत, कोई गिला  
नहीं था कभी आयी कभी गई, बिजली खेले आँख मिचौली हाथ के पंखे, मोम  
बत्तियाँ, कमियों का पता नहीं था

कभी गुलि डंडा पिठू, कभी की थी बारी कँचे लुक्कन छुप्पी झूला गुलेल  
से पथरी मारी पड़ाई क्या है चीज़ उस बारे कम सोचा था अभी है बचपन खेलो  
कूदो, पड़ने लिखने को उम्र है सारी

हवा में पतंगें फल फूल ज़मीं पे भर देते रंगीन नज़ारा ना परवाह दूजों पास है क्या घड़ा  
रहता भरा हमारा आँगन दिन में खेल मैदान मछरदानी में तारों के नीचे सोने का  
कमरा हमारा

बचपन के अनमोल दौर की तस्वीरें मन में जब खोलूँ ना ग़म ना ज़्यादा सपने, बस वर्तमान  
ही काफ़ी था

स्वामी जी शकुन्तला दर्शी माँ का आशीर्वाद बरसता है ऐसा सुंदर सुहाना बचपन किस्मत  
वालों को मिलता है

जैसे हवा में खुशबू, तालाब में रंगीन कमल खिलता है ऐसा सुंदर बचपन किस्मत वालों  
को मिलता है ऐसा सुंदर बचपन किस्मत वालों को मिलता है

जुगिंदर लूथरा

## एक फूल की कहानी उस की जुबानी

खुली हवा में मस्ती से मैं इठलाता लहराता था  
महक उभरती शोख लबों से गीत मधुर मैं गाता था

साथ थे मेरे संगी साथी रंग बिरंगे और निराले  
भँवरे तितली पीते रस उन का जो छलकते क्रिस्मत वाले

ले के चुम्बन एक फूल का दूजे पर वो जाते थे  
सात सुरों से मुझे रिझाने गीत खुशी के गाते थे

दूजे से सुंदर लगने के नए नए साधन अपनाते  
देख छवि पानी में अपनी खुशी से इतराते शर्माते

बहुत सुंदरता अच्छी भी है और बुरी भी  
रंगों से भरी जवानी अच्छी भी है और बुरी भी

चाहत भरा चुम्बन प्यार से सहलाना अच्छा लगता था  
अफ़सोस मेरा सुंदर चेहरा फूलों के व्यापारी को अच्छा लगता था

भरी जवानी रंगों से लदे फूलों की तालाश में था  
मुझ पर नज़र पड़ी पर मुझे अभी अहसास ना था

उस की काली नज़र ने मुझ में शोहरत पैसा देखा  
गुलदस्ते में ख़ूब सजे गा ये रंगीं सुंदर चेहरा

मन ही मन उस क़ातिल ने बुरी नज़र से सोचा था  
बेख़बर अनजान था मैं क़ातिल में आशिक़ देखा था

जुल्मी ने चमकती कैची निकाली अपने झोले से  
पकड़ के गर्दन अलग किया मुझे मेरी ही माँ से

एक ही झटके से दर्द दिया लाखों सोए सपने तोड़े  
दो पल की खुशी की खातिर मुझे और मेरे साथी जोड़े

बेदरदी ने बाँध रस्सी से हम सब को क़ैदी बनाया  
पानी भरे शीश महल में बेचारों को ख़ूब रुलाया

शादी की खुशी मनाने मेज़ों पर सब को सजाया  
जिस की खातिर हम ने जान गँवायी खून बहाया  
वो मस्ती में माथूक़ा से लिपटा झूमा लहराया

इक बार भी उस ने मुझे ना देखा ना कुर्बानी मेरी  
शाम ढली फिर रात हुई धीमे से बात हुई मेरी

"बहुत सुंदर हैं ना ये फूल, बहुत महंगे होंगे"  
मन रोया सुन ज़िंदगी के सपने पैसे में तुलते

मेरा रोना ना किसी ने देखा ना दुःख समझ पाया

खाना पीना खत्म शुक्रिया तक कोई कह ना पाया

कुछ क्रिस्मत वाले गए किसी संग घर सजाए  
कुछ मेरे जैसे बेदरदी कचरे में जा समाए

क्या सोचा था क्या क्या सपनें दिल में थे बनाए  
अपनी ज़िंदगी रंगीं हो गी कई महीनों खिलेंगे  
अपना इक संसार नया हो गा बीज बच्चे मिलेंगे

कोई क्रिस्मत से लड़ नहीं पाता  
लिखा कोई मिटा नहीं पाता  
अब दम तोड़ रहा हूँ इक कूड़े के बर्तन में  
पानी में मिले मेरे आँसू पर दिल से दुआ देता हूँ

खुश रहें जिन कि खातिर मेरा क़त्ल हुआ खून बहा  
लम्बी उम्र हो उन की बेवक्त ना उन को कोई काटे  
आँखें बन्द किए बेहोशी में बस यही दुआ देता हूँ  
लम्बी उम्र हो उन की बेवक्त ना उन को कोई काटे

### शब्द शक्ति

शब्दों की मंडी में लफ़्ज़ है लाखों आओ उठा लें जिसे भी चाहें कोई काँटों के साथ जुड़े  
कोई महके फूल गले में डाले बाहें

कोई लोगों में बाँटे खुशियाँ कोई ज़ख़्म दे काँटों से ज़्यादा कोई दुःख को दुगना चौगुना कर  
दे कोई उस को कर दे आधा

शब्द ऐसे भी देखता हूँ जो रोते दुखियों के आँसू सुखाएँ कुछ ऐसे चुभते हैं जो खुशक्रिस्मत  
हँस्ते लोगों को रुलाएँ

दो शब्द तारीफ़ के गिरे पिछड़ों को फिर चलना सिखाएँ जली कठोर निकली होठों से बातें  
उमर भर कैसे बिसराएँ

मीठा शब्द इक अजनबी को महबूब जीवन साथी बनाए बेसमझि से गुस्से में कहे ना जुड़ने  
वाली दीवार बनाए

पीठ पीछे कही कड़वी बातें जब उन तक पहुँच जाएँ सालों के बनाए रिश्ते नाते पल में टूटें  
फिर जुड़ ना पाएँ

कुछ शब्द हैं जिन्हें बिन कहे लब आँखें बेहतर समझाएँ कई ऐसे हैं जिन्हें कहने पर खुद  
शर्म से आँखें झुक जाएँ

कुछ कलियों में छुपा के काँटों से चुभाया करते हैं दिखा के सब्ज़ बाग़ झूठी तरकीबों से  
लुभाया करते हैं

कुछ बेवक्त बेहूदा कहे शब्द लोगों को परेशान करते हैं कहने वाले को ख़बर नहीं सुनने  
वाले दिल ही दिल मरते हैं



“चिपके गाल वज़न कम कमज़ोर हो गये हो” बातें कही जायें कठोर लफ़्ज़ अच्छा होते  
मरीज़ को फिर से बीमार बनायें

कुछ शब्द जिन्हें कहना चाहता हूँ वो सुनने वाले ही ना रहे वो कैदी बन चुपचाप मन में  
तड़पे फिर आँसुओं में जा बहे

शब्द बहुत ही शक्तिमान दुनियाँ को बदल डाले इक इंसान शब्दों को तोलो ये वापिस ना  
आएँ जैसे तीर नें छोड़ा कमान शब्दों को तोलो ये वापिस ना आएँ जैसे तीर नें  
छोड़ा कमान

JK Luthra, April 8, 2023



## Chapter 2

### English Poems

**Be a Sun**

Illuminate whatever you touch Be a giver, receivers misery too much  
Your light free for all, seek nothing back Recipients circle, spin, keep  
coming back  
Give life to others, unaffected by them They use or misuse not for  
you to judge them  
Others may take you for granted Keep glowing even if feel unwanted  
You were born to shine, stay detached Spend days giving, no strings  
attached  
Be not arrogant of your bright rays One who made you gave limited  
days  
So my daughter and my son Stay bright and giving like a sun Be a  
sun

JK Luthra, 2022

## Spring

Summer grants trees abundant leaves and fruits Buds bloom flowers  
blossom Pearly dew covers fresh shoots

What life gives, in time it snatches away Autumn hits us all Bad  
times, like winter Will hit us all,

Bare branches suffer deadly ice Burden of heavy snow Earth spins  
around sun, gets life it bestows

Ice n snow accept defeat, drip meekly away Have faith in God when  
ups downs come your way

Have no doubt, bad times will pass as they came Spring will arrive for  
sure, buds will bloom again What was taken away mercilessly  
will return again

Bad times, like winter, hit us all Stay sturdy, hang in like brown  
branches Spring will arrive again, again and yet again

JK and Dolly Luthra